प्रातःक्लास ओमशांति 19–8–67

ओमशांति। बेहद का बाप बैठ बेहद के बच्चों को समझाते हैं। अब प्रश्न उठता है बेहद का बाप कौन?यह तो जानते हो कि सब(का) बाप एक ही है, जिसको परमपिता कहा जाता है। परमपिता तो एक ही है। उनको सब बच्चे भूल गए हैं। इसलिए परमपिता परमात्मा ,जो दुःखहर्ता–सुखकर्ता है उनसे सुख कोई को मिलता नहीं है। अब तुम बच्चे जानते हो बाप हमारे दुःख कैसे हर रहा है। फिर सुख और शांति में चले जावेंगे। सब तो सुख में नहीं जावेंगे। कुछ सुख में कुछ शांति में चले जावेंगे। कोई सतयुग में पार्ट बजाते हैं,कोई त्रेता में ,कोई द्वापर में। तुम जब सतयुग में रहते हो तो बाकी सब मुक्तिधाम में। उनको कहेंगे ईश्वर का घर। मुसलमान लोग जब नमाज पढ़ते हैं तो सब मिलजुल कर खुदा ताला की बंदगी करते हैं। किसलिए?क्या बहिश्त के लिए या अल्लाह पास जाने लिए। अल्लाह के घर को बहिश्त नहीं कहेंगे। वहां तो आत्माएं शांति में रहती हैं। शरीर नहीं रहती। यह जानते होंगे अल्लाह के पास ....नहीं ;परंतु हम आत्माएं जावेंगे। अब सिर्फ अल्लाह को याद करने से तो कोई पवित्र नहीं बन जावेंगे। अल्लाह को जानते ही नहीं। अब मनुष्यों को राय देवें कि अल्लाह बाप आय सुख–शांति का वर्सा दे रहे हैं। वा विश्व में शांति कैसे होती है। विश्व में शांति कब थी यह उन्हों को कैसे समझावें?सर्विसेबुल बच्चे जो हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार उन्हों को यह चिंतन रहता है। यह सब बातें मनुष्य नहीं समझते। तुम ब्रह्मामुखवंशावली ब्राह्मणों को ही बाप ने अपना परिचय दिया है और सारी दुनियां के मनुष्य मात्र की पार्ट का भी परिचय दिया है। अब हम मनुष्य मात्र को बाप और रचना की परिचय कैसे देवें। बाप सबको कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम खुदा के घर चले जावेंगे। गोल्डेन एज अथवा बहिश्त में सब तो जावेंगे। वहां तो होता ही है एक धर्म। बाकी सब शांतिधाम में हैं। इसमें कोई की नाराज होने की तो बातें ही नहीं। मनुष्य शांति मांगते हैं। वह मिलती ही है अल्लाह अथवा गॉडफादर के घर में। आत्माएं सब आती भी हैं शांतिधाम से। वहां फिर तब जावेंगे जब नाटक पूरा होगा। बाप आते भी हैं पतित दुनियां से सबको ले जाने। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है हम शांतिधाम में जाते हैं। फिर सुखधाम में आवेंगे। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरुषोत्तम अथवा उत्तम ते उत्तम पुरुष। जब तक आत्मा पवित्र न बनी तब तक उत्तम पुरुष बन नहीं सकते। अब बाप तुमको कहते हैं मुझे याद करने से सृष्टिचक्र को जानने से और साथ में दैवी गुण धारण करने से तुम पुरुषोत्तम बन जावेंगे। ऐसे नहीं कि सिर्फ याद से पुरुषोत्तम बन सकते हैं। नहीं, दैवी गुण भी धारण करनी है पुरुषोत्तम बनने लिए। बाबाने समझाया था कि उस समय सभी की कैरेक्टर बिगड़ी हुई है। नई रचना में तो कैरेक्टर बहुत फर्स्ट क्लास होती है। भारतवासी ही उंच कैरेक्टर वाले थे। उन उंच कैरेक्टर वालों को कम कैरेक्टर वाले माथा टेकते हैं। उनकी कैरेक्टर वर्णन करते हैं। यह तुम बच्चे ही समझते हो। अब औरों को कैसे समेझावें?कौन सी सहज युक्ति रचें?यह है आत्माओं का तीसरा नेत्र खोलना। बाबा की आत्मा में ज्ञान है। मनुष्य कहते हैं मेरे में ज्ञान है। यह देहअभिमान है। इसमें तो आत्माभिमानी बना है। सन्यासी लोग की आत्मा में ज्ञान है शास्त्रों का। बाप का ज्ञान तो जब बाप आये देवे। युक्ति से समझाना है। वह लोग कृष्ण को भगवान समझ लेते। भगवान को जानते ही नहीं। ऋषि–मुनि आदि भी कहते थे हम नहीं जानते। समझते हैं मनुष्य भगवान हो नहीं सकता। निराकार भगवान ही ....है। उनका नाम,रूप,देश,काल क्या है, रूप,रंग क्या है?कुछ नहीं जानते तो कह देते नाम–रूप से न्यारा है। इतनी भी समझ नहीं है कि नाम–रूप न्यारा वस्तु हो कैसे सकती?इम्पासिबल है। अगर कहते पत्थर–भित्तर में है,कण2 में है तो वह तो नाम–रूप हो जाता है। कब क्या,कब क्या कहत रहते। बच्चों का दिन–रात बहुत चिंतन चलना चाहिए कैसे मनुष्यों को हम समझावें। यह मनुष्य से देवता बनने का पुरुषोत्तम संगमयुग है। मनुष्य देवताओं को नमन करते हैं। मनुष्य मनुष्य को....नहीं.....। मुसलमान लोग भी बंदगी करते हैं। अल्लाह को बैठकर याद करते हैं। तुम जानते हो हम लोग.....पास तो पहुंच नहीं सकेंगे। मुख्य बातें हैं अल्लाह के पास कैसे पहुंचें। फिर अल्लाह कैसे नई

सृष्टि रचते हैं, यह सब बातें कैसे समझावें। इसके लिए बच्चों को विचार–सागर–मंथन करना पड़े। बाप को तो विचार–सागर–मंथन नहीं करना है। बाप विचार–मंथन करने की युक्ति बच्चों को बतलाते हैं। इस समय सभी आयरन एज में तमोप्रधान हैं। जरूर कोई समय गोल्डेन एज भी होगी। तो गोल्डेन एज को प्योरिटी कहा जाता है। प्योरिटी और इम्प्योरिटी। सोना में भी खाद डाले जाते हैं ना। आत्मा पहले सतोप्रधान है फिर उनमें खाद पड़ती है। जब तमोप्रधान बन जाती है तब बाप को आना है। बाप ही आय फिर सतोप्रधान सुखधाम बनाते हैं। सुखधाम में सिर्फ भारतवासी ही होते हैं। बाकी सब .....जाते हैं। शांतिधाम में सब प्योर रहते हैं। फिर यहां आकर आते2 इम्प्योर बनते जाते हैं। हरेक मनुष्य सतोप्रधान से सतो,रजो,तमो में जरूर आते हैं। अब उन्हों को कैसे बतावें कि तुम सब अल्लाह के घर कैसे पहुंच सकते हो। देह के सब सम्बंध को छोड़ अपन को आत्मा समझो। भगवानुवाच है ही। देह धर्म सब छोड़ अपन को आत्मा समझो। मेरे को याद करने यह जो 5भूत हैं निकल जावेंगे। तुम बच्चों को दिन प्रतिदिन चिंता रहना चाहिए। बाप को भर चिंता हुई तब तो खयाल आया ना कि जाउं जाकर सबको सुखी बनाउं। साथ में बच्चों को भी मददगार बनना है। अकेले बाप क्या करेंगे?तो यह विचार–सागर–मंथन करो। क्या ऐसा उपाय निकालें जो मनुष्य झट समझ जाए। टाइम तो लगता है। अब इतने मनुष्य को उसमें भी खास भारतवासियों को कैसे सुनावें?सर्विस तो बच्चे करते भी हैं। कोई अच्छी करते हैं ,कोई कम करते हैं। जैसे बच्चों ने सेमिनार किया ,उसमें भी बहुत राय निकालते हैं। क्या युक्ति निकालें जो मनुष्य समझ जाए कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। इस समय ही मनुष्य पुरुषोत्तम बनते हैं। पहले उंच होते हैं फिर नीचे गिरते हैं। पहले2 तो नहीं गिरेंगे ना। आने से ही तो तमोप्रधान नहीं होंगे। हर चीज पहले सतोप्रधान ,फिर सतो,रजो,तमो होती है। बच्चे इतनी प्रदर्शनियां आदि करते हैं फिर भी कुछ समझते नहीं हैं। तो और क्या उपाय करें। भिन्न2 उपाय तो करनी पड़ती है ना। उनके लिए टाइम भी मिला हुआ है। फट से तो कोई सम्पूर्ण नहीं बन सकते। चंद्रमा थोड़ा2 करके आखिर सम्पूर्ण बनता है। हम भी तमोप्रधान बने हैं फिर सतोप्रधान बनने में तो टाइम लगता है। वह तो है जड़, यह है चैतन्य। तो हम कैसे समझावें?मुसलमान के मुरसिद को समझावें। तुम यह नमाज क्यों पढ़ते हो?किसकी याद में पढ़ते हो?यह विचार–सागर–मंथन करना है। बड़े2 दिनों पर प्रजिडेंट आदि भी मस्जिद में जाते हैं। बड़ों से मिलते हैं। सभी मस्जिदों की फिर एक बड़ी मस्जिद होती है। वहां जाते हैं ईद मुबारक देने। अब मुबारक तो यह है। हम सब दुःखों से छूट सुखधाम में जावें। तब कहा जाए मुबारक हो। हम खुशखबरी सुनाते हैं। कोई विन करते हैं तो भी मुबारक देते हैं। कोई शादी करते हैं तो भी मुबारक देते हैं। ....सदैव सुखी रहो। अब तुमको तो पता है, बाप ने समझाया है हम एक/दो को मुबारक कैसे देवें। इस समय हम बेहद के बाप से मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा ले रहे हैं। तुमको तो मुबारक मिल सकती है। बाप समझाते हैं तुमको मुबारक हो। तुम 21जन्म लिए पदमपति बन रहे हो। अब सभी मनुष्य कैसे बाप से वर्सा लें। सबको मुबारक दे। तुमको अभी पता पड़ा है ;परंतु तुमको मुबारक नहीं दे सकते। तुमको जानते ही नहीं। मुबारक देवें तो खुद भी मुबारक पाने लायक बनें। तुम तो गुप्त हो ना। तुम एक/दो को मुबारक दे सकते हो। मुबारक हो हम बेहद के बाप के बने हैं। तुम कितनी खुशनसीब हो। कोई को लाटरी मिलती है या बच्चा जन्मता है तो कहते हैं मुबारक हो। बच्चे पास होते हैं तो भी मुबारक देते हैं। तुमको तो दिल ही दिल में खुशी होती है। अपन को मुबारक देते हो। हमको बाप मिला है जिससे हम वर्सा ले रहे हैं। अब कैसे समझावें जो समझे हम अपने को मुबारक देते हैं। बाप समझाते हैं ....आत्माएं जो दुर्गति को पाई हुई हों सो अब सदगति को पाते हो। मुबारक हो एक ही सबको .....है। पिछाड़ी में सबको मालूम पड़ेगा। जो उंच ते उंच बनेंगे उनको नीचे वाले कहेंगे मुबारक हो आप सूर्यवंशी कुल

में महाराजा–महारानी बनते हो। नीचे कुल वाले मुबारक उनको देंगे। जो विजयमाला के दाने बनते हैं। जो पास होंगे उनको मुबारक मिलेगा। उनकी ही पूजा होती है। आत्मा को भी मुबारक हो। जो उंच पद पाती है। फिर भक्तिमार्ग में उनकी पूजा होती है। मनुष्यों को पता नहीं है कि क्यों पूजा होती है। तो बच्चों को यही चिंता रहनी है कि कैसे समझावें। हम पवित्र बने हैं दूसरे को कैसे पवित्र बनावें। दुनियां तो बहुत बड़ी है ना। क्या किया जाये जो घर2 में पैगाम पहुंचावें। पत्रे (पर्चे) गिराने से तो सबको मिलती ही नहीं है। यह तो एकैक को हाथ में पैगाम चाहिए ;क्योंकि सब हैं अंधे के औलाद अंधे। उनको बिल्कुल पता नहीं है कि बाप के पास कैसे पहुंचे। कह देते हैं सब रास्ते परमात्मा से मिलने के हैं ;परंतु बाप कहते हैं यह भक्ति तो जन्म जन्मांतर करते आये हो। दान–पुण्य आदि करते आये हो ;परंतु रास्ता मिला कहां?कह देते हैं यह सब अनादि चलता आया है ;परंतु कब से शुरू हुआ यह पता नहीं। अनादि का अर्थ नहीं समझते। तुम्हारे में भी नम्बवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं। यह भक्ति कल्ट आधा कल्प होता है। सतयुग में होता नहीं। वह है ज्ञान का प्रालब्ध 21जन्म। वह है सुख भक्ति में दुःख। बच्चे जानते हैं 63जन्म भक्ति करते आये हैं। यह भी समझते नहीं हैं। कोई बहुत भक्ति कैसे करते हैं। वह लोग इस जन्म के बहुत भक्ति समझते हैं। तुम बच्चों को हिसाब समझाया जाता है किसने बहुत भक्ति की है। यह सब रेज (राज) की बातें एकैक को तो नहीं समझाय सकते हैं क्योंकि कोर्ट,अखबार में डालें। टाइम तो लगेगी। सबको पैगाम तो इतना जल्दी मिल नहीं सके। सब पुरुषार्थ करने लग पड़े तो फिर स्वर्ग में भी आ जाए। यह हो नहीं सकता। अब तुम पुरुषार्थ करते हो स्वर्ग के लिए। अब हमारे जो धर्म वाले हैं उनको कैस निकालें?कैसे पता पड़े कौन2 ट्रांसफर हुए हैं। हिंदू धर्म वाले असल में देवी देवता धर्म के हैं। यह भी कोई जानते नहीं। पक्के हिंदू होंगे तो अपने आदि सनातन देवी देवता धर्म को मानेंगे। देवी देवता धर्म वाले कौन हैं यह मालूम कैसे पड़े। बाप कहते हैं एक तो शिव की पुजारियों को पकड़ो। बाप को याद करते हैं वर्सा लेने लिए। शिव के भक्त को तुम समझाय सकते हो। शिवबाबा है सबका बाप। तो अभी ऐसे नहीं कहेंगे कि वह ठिक्क–भित्तर सबमें है। बाप का तो एक ही रथ मुकर्रर है। इस भागीरथ में प्रवेश कर पतितों को पावन बनाते हैं। ठिक्कर–भित्तर में हो कैसे सकते? बाप से इन देवी देवताओं को वर्सा मिलता है। बनते हैं कलियुग और सतयुग के बीच संगम पर। अब यह औरों को कैसे समझावें कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। पुरुषोत्तम अर्थात् उंच ते उंच पुरुष तो देवताओं को ही कहा जाता है। यह (लक्ष्मी–नारायण) गोल्डेन एज्ड पारस बुद्धि। वह ही फिर पत्थर बुद्धि बनते हैं। भारत ही गोल्डेन एज्ड फिर आयरन एज्ड बनता है। तो यह समझाना पड़े उंच ते उंच भगवान बाप है। उनसे हम वर्सा कैसे लेवें?इस समय तो सब पतित हैं। बुलाते भी हैं हे पतित–पावन निराकार को ही याद करते हैं। और किसको नहीं। आत्मा पतित–पावन बाप को बुलाती है कि हमको आकर पावन बनाओ। उनका समय है ही कलियुग अंत और सतयुग आदि का। पावन बनाय फिर पावन दुनियां में ले जाते हैं। इन्हों (लक्ष्मी–नारायण) ने इतना बड़ा राज्य कैसे लिया?कैसे लिया?भारत में इस समय तो कोई राजाएं तो हैं नहीं जिसको जीतकर राज्य लिया हो। वह कोई लड़ाई कर तो राजाई नहीं पाते हैं। मनुष्य से देवता कैसे बना जाता है। कोई को पता नहीं है। तुमको भी अभी बाबा से पता पड़ा है। औरों को कैसे बतावें, जो मुक्ति–जीवनमुक्ति को पावें। पुरुषार्थ कराने वाला चाहिए ना। जो अपन को जान और अल्लाह को याद करे। बोलो, तुम ईद की मुबारक कहते हो। तुम अल्लाह पास जा रहे हो। पक्का निश्चय है?जिसके लिए तुमको इतनी खुशी होती है। यह तो तुम वर्षों से करते आये हो। तुम्हारी ईद मुबारक वर्षों से चली आती है। कब खुदा के पास जावेंगे या जावेंगे ही नहीं। मूंझ पड़ेंगे। बरोबर हम जो यह पढ़ते हैं क्या करने लिए। उंच ते उंच तो एक अल्लाह ही है। बोलो, अल्लाह के बच्चे तुम भी आत्म हो ना। आत्मा चाहती है हम अल्लाह के घर जावें। वहां कैसे जावेंगे। इस समय सब पतित आयरन एज्ड हैं। दोजक है। बहिस्त तो है नहीं। अब तुम अल्लाह के पास कैसे जावेंगे?

यह बताओ। बताय न सकेंगे। सदैव दोजक तो नहीं होता। बहिस्त भी तो होता है ना। आत्मा पहले2 प्योर थी फिर पतित बनी है। अब इनको बहिश्त तो नहीं कहेंगे। सब आत्माएं पतित हैं। पावन कैसे बनें जो अल्लाह के घर जायें। वहां विकारी आत्मा होती नहीं। वायसलेस होनी चाहिए। आत्मा कोई फट से तो सतोप्रधान नहीं बनती। यह सब विचार–सागर–मंथन किया जाता है। बाबा का विचार–सागर–मंथन चलता है। तब तो समझते हैं ना। युक्तियां निकालनी चाहिए किसको कैसे समझावें। मठ के एक/दो बड़ों को पकड़ो,जो फिर सबको समझावें। विचार–सागर–मंथन कर युक्तियां निकालनी होती हैं। सर्विसेबल बच्चे ही मंथन कर फिर सर्विस कर सकेंगे। मंथन चलता है ना इस टॉपिक पर ऐसे2 समझावेंगे। जिनका मंथन चलता है वह फिर सर्विस भी हैं। मंथन जो नहीं करते वह सर्विसेबल नहीं हैं। खुद भी समझते होंगे। तो हेड्स जो हैं उन्हों को पकड़ने से आवाज जल्दी निकलेगा। कहेंगे यह सन्यासी आदि बिल्कुल उल्टा सुनाते हैं। यह सब झूठ बोलते हैं। आबू ही चट हो जाए। बड़े2 पोप पादरी है उनको थोड़े ही मालूम है कि यह है संगम का समय। बाप कहते हैं मामेकम याद करो। और कोई समझाय न सके। पोप समझाते हैं लड़ाई न करो। उनका भी मानते थोड़े ही हैं। अब इनसे कोई बड़ा चाहिए। तुम तो हो बिल्कुल साधारण। पोप को भी समझाने की तुमने कोशिश की ;परंतु शायद समय नहीं है। जल्दी समझ जाए तो रिवोल्यूशन हो जाए। समझते तो हैं ना दुनियां ही खतम हो जावेगी। इतना समझते जरूर हैं कि खुदा का हाथ है ,जो नई दुनियां की सीापना कराय और पुरानी दुनियां का विनाश कराते हैं। गाया हुआ है ब्रह्मा द्वारा नई दुनियां की स्थापना, पुरानी दुनियां का विनाश कराता हूं। खुदा का हाथ तो है ना। बच्चे जानते हैं कल्प पहले मुआफिक हम फिर से राज्य करेंगे। स्थापना,विनाश,पालना त्रिमूर्ति का चित्र लगा हुआ है ;परंतु पूरी रीत कोई समझते नहीं। भल कहा जाता है शंकर द्वारा विनाश ;परंतु बाबा कहते हैं क्या कि विनाश करो?यह तो ड्रामा अनुसार आटोमेटिकली कर्मातीत अवस्था का टाइम होगा तो विनाश होगा। प्रेरणा की कोई बात नहीं। आज फलानी चीज खाने की प्रेरणा नहीं हैं अर्थात् विचार नहीं है। बाकी प्रेरणा और कुछ नहीं है। प्रेरणा का अर्थ और कुछ होता नहीं। तो औरों का भी कल्याण करना है। बहुतों का कल्याण करेंगे तो अपना भी कल्याण होगा। अपन को भी दैवी गुणों में लाना है। किसका कल्याण ही नहीं करते तो पूछकर भी क्या करेंगे कि इस हालत में मर जावें तो क्या होगा?धूर भी नहीं मिलेगा। समझते हैं हम बाबा के पास रहते हैं;परंतु करते क्या हो?अनपढ़ी पढ़े आगे भरी ढोवेंगे। यह तो सीधी बातें हैं। तो जितना हो सके सवेरे उठकर विचार–सागर–मंथन करना है। भक्ति भी मनुष्य सवेरे उठ करते हैं। अगर कहते हैं कृष्ण ने राजयोग सिखाया,उसने भी गाली खाई तो जरूर तुमको भी गाली खानी पड़े। शिवबाबा को भी गाली देते हैं। ठिक्कर–भित्तर में कह देते हैं। ब्रह्मा को भी ढेर गाली देते हैं। उनसे डरते नहीं हैं। भल भूं2 करते रहते हैं। तुम अपनी शांति में रहो। खुशी रहनी चाहिए हमको तो बाबा मिला है। हम सब दुःखों से छूटने वाले हैं। अच्छा पुरुषार्थ करने वाले ही दिल पर चढ़ते हैं। अपन को देखना चाहिए इस हालत में हमको क्या पद मिलेगा?यह तो कल्प2 की बात होती है। सर्विस के लिए कुछ न कुछ विचार–सागर–मंथन करना है। और2 समाचार पूछने ,झरमुई,झगमुई करने से तो बोलो शिवबाबा की याद में रह काम करो। भण्डारे में भी एक/दो को ऐसे शिवबाबा की याद दिलाते रहो। रहमदिल बनना है। अपन पर भी औरों पर भी रहम होगा। तब बाबा भी मिसाल देते हैं। ....रय(रीढ़–बकरियां) क्या जाने सरमंडल (सुरमंडल) की साज से(को) .....सांडे देहाभिमानी क्या समझेंगे। वह तो जंगली काम ही करते रहेंगे। मित्र–सम्बंधी आदि बुलाते हैं तो उनकी भी सर्विस करनी है। सच्ची दिल से जो समझते होंगे वह ही समझाय सकेंगे। नहीं तो ....समझाने का भी अक्ल नहीं आवेगा। योग हो तब किसको तीर भी लगे। जौहर ही नहीं होगा तो तीर लगेगा ही नहीं। योग भी चाहिए ना। योग की जौहर बिगर तलवार क्या काम की?जितना याद में रहेंगे उतना जौहर भरेगा। इस याद में ही विघ्न पड़ती है। ओम।